जीवन का झरना

- आरसी प्रसाद सिंह

संघर्ष ही जीवन को तेजस्वी बनाता है। जिस तरह झरना कठोर चट्टानों को तोड़कर अपना प्रवाह बनाता है। उसी तरह जीवन का प्रवाह भी अपनी बाधाओं को दूर करता हुआ आगे बढ़ता रहता है - कवि ने यौवन के उत्साह और उल्लास को परम गतिमयता से जोड़कर स्पष्ट किया है कि जीवन की गतिशीलता उसकी जीवंतता है।

यह जीवन क्या है ? निर्झर है;
मस्ती ही इसका पानी है।
सुख-दुख के दोनों तीरों से;
चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अन्तर से ?
किस अंचल से उतरा नीचे ?
किन घाटों से बह कर आया
समतल में अपने को खींचे ?
निर्झर में गति है, यौवन है;
वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ है चलने की
अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता;
वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता।
चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरती है;
नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे;
निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर में गति ही जीवन है;
रुक जायेगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जायेगा मानव,
जग-दुर्दिन की घड़ियाँ गिन-गिन
निर्झर कहता है- ''बढ़े चलो!
तुम पीछे मत देखो मुड़कर।''
यौवन कहता है- ''बढ़े चलो!
सोचो मत होगा क्या चलकर।''
चलना है केवल चलना है;
जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही,
निर्झर यह झरकर कहता है।

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निर्झर किन गुणों के आधार पर आगे बढ़ता है ?
2. निर्झर को किन-किन बाधाओं को पार करना पड़ता है ?
3. निर्झर क्या कहता है ?
4. जीवन रूपी निर्झर के दोनों किनारे कौन-कौन से हैं ?
5. निर्झर की सिर्फ एक ही धुन है वह कौन-सी है ?
6. कविता के आधार पर मनुष्य कैसे बढ़ता है?
7. कविता के आधार पर निर्झर की तीन विशेषताएँ लिखिए।
8. निर्झर को बाधाओं को पार करने के लिए क्या करना पड़ता है ?
9. निर्झर क्या कहना चाहता है और क्यों ?

योग्यता विस्तार

1. अपने देखे हुए झरने का वर्णन लगभग दो सौ शब्दों में लिखिए और कक्षा में पढ़कर सुनाइए।
2. निर्झर पर लिखी गई अन्य कविताओं का कक्षा में सस्वर वाचन कीजिए।
3. निर्झर, नदी, तालाब, बादल आदि शब्दों को लेते हुए एक कविता लिखिए।

शब्दार्थ

निर्झर - झरना, रोड़ा - अवरोध, रुकावट, यौवन - युवा अवस्था।